+1 7 More Next Blog»

जानकीपुल

+1 14

Pages

- Home
- वैधानिक
- संपर्क

Search Your Blog

Search

Blog Archive

Blog Archive

Followers

Join this site
with Google Friend Connect

Members (1465) More »

Already a member? Sign in

Friday, January 31, 2014

उड़ना नहीं सीखा था मैंने अपनी माँ की कोख में

डीपीएस पुणे में कक्षा छह में पढ़ने वाले अमृत रंजन ने हमें अपनी कवितायें भेजी तो मैं थोड़ा विस्मित हुआ। 11 साल का लड़का सुंदर भाषा में ऐसी कवितायें लिखता है जिसमें सुंदर की संभावना दिखाई देती है। अगर लिखता रहा तो आगे कुछ बहुत अच्छा लिखेगा ऐसी संभावना दिखाई देती है। मुझे इसलिए भी अच्छा लगा कि ऐसे स्कूलों में पढ़ने वाला लड़का अच्छी हिन्दी में कवितायें लिख रहा है जहां हिन्दी न आना फैशन होता है। आप भी पढ़िये और अमृत को शुभकामनायें दीजिये- प्रभात रंजन
==

1.
कागज़ का टुकड़ा

एक कागज़ के टुकड़े का,
इस ज़माने में,
माँ से ज़्यादा मोल हो गया है।
एक कागज़ के टुकड़े से
दुनिया मुट्ठी में आ सकती है।

एक कागज़ के टुकड़े से
लड़कियाँ ख़ुद को बेच देती हैं।
लड़के ख़रीद लेते हैं।
एक कागज़ के टुकड़े से
छत की छाँव मिलती है।

लेकिन जिसके पास कागज़
का टुकड़ा नहीं है
उसका क्या होता है?
रात बिन पेट गुजारनी पड़ती है।
आँसुओं को पानी की तरह
पीना पड़ता है।
छत के लिए तड़पना पड़ता है।

बिन एक कागज़ के टुकड़े के,
हम दुनिया में गूँगे होते हैं।
मगर आवाज़ दिल से आती है,
और याद रखो दिल को
ख़रीदा नहीं जा सकता।

2.
रात

अंधेरे में कुछ समझ न आया
लड़खड़ाते हुए,
कदम रखा उस अँधेरी रात में।
लगना डर शुरू हो जाता है।

लघु प्यार की बड़ी कहानियां

कोठागोई: मेरी नई किताब

Google Chromecas
Rs.2699
Enjoy online videos on a bigger screen. Buy now at Flipkart.

Popular Posts

अरुंधा
की का
अंग्रेजी
कवयि
सुब्रम
कविता
समाचार साहित्य वार्षिकी
गहरे इंगितों वाली...

गौरव
कहानी
लड़के'
यही व
जिसके
भारती
प्रसिद्ध युवा लेखक गौरव
कहानी संग्रह को प्रकाशित
टालमटोल किया. कहा ग

क्या 'वासकसज्जा' हिंदी व
अश्लील उपन्यास है?
इमरजेंसी के बाद कोठे का
लगा था. इस बात के ऊप

सितारों की हल्की सी रौशनी
हज़ारों ख़याल मन में।

लगता है
गुस्ताखी कर दी
रात की इस चंचलता में फंस कर
अलग-अलग आवाज़ें आ
हमें सावधान कर जाती
कि "बेटा, आगे ख़तरा
पल रहा है, उसे उठाना मत।"

यह हमें उधर जाने के लिए
और भी उत्साह भर देता है।
कदम से कदम मिलाते हुए
आगे बढ़ते हैं।

एक रौशनी हमारी आँखों
से अपनी रौशनी दे
हमें उठा देती हैं।

बिस्तर पर बैठे हुए
सोचते हैं।
इतना उजाला क्यों है भाई!

3.
अगर हम उसके बच्चे हैं

अगर हम उसके बच्चे हैं
तो वह हमें अमर क्यों नहीं बनाता।
क्या वह अमर होने का लाभ,
केवल ख़ुद लेना चाहता?

अगर हम उसके बच्चे हैं
तो वह इस दुनिया में आ,
अनाथों के लिए माँ की ममता,
क्यों नहीं जता जाता?

अगर हम उसके बच्चे हैं,
तो वह, जिसे न किसी ने देखा
न किसी ने सुना है, वह,
अपने बच्चे को भूखा मरते
हुए कैसे देख पाता?

अगर हम उसके बच्चे हैं,
तो वह हम भाई-बहनों को,
एक-दूसरे की छाती काट देने से
क्यों नहीं रोक जाता?

अगर हम उसके बच्चे हैं
तो वह हमारे सबसे अच्छे
भाइयों और बहनों को,
मौत से पहले क्यों मार देता?

मै पूछता हूँ क्यों?
ऐसे कोई अपने बच्चों को पालता है?

4. -----------
चिड़िया

उड़ना नहीं सीखा था,
मैंने अपनी माँ की कोख में

ध्यान
इमरजें
के बाद
के पारं

शरतच
और च
मुजफ्
शरतच
मुजफ्
गये थे.
रूप में उनकी प्रसिद्धि नहीं
हालाँकि उन्होंने लिखना शु
था. वि...

मनोहर
से एक
बातची
सन 20
आकाश
अभिले
मैंने मनोहर श्याम जोशी जं
लंबा इंटरव्यू लिया था। उस
जीवन के...

मुंबई
की अ
जी का
मुम्बई
को ले
ब्लॉक
लिखने वाले पत्रकार से वि
एस. हुसैन जैदी की एक वि
'मुम्बई की माफ...

Total Pageviews

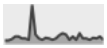

697

झरोखा

एक ही बार में नहीं उड़ पाई मैं

गिरी मैं कई बार
हुआ दर्द
लेकिन उड़ने के लिए हुई
मैं फिर तैयार
बार-बार, बार-बार
गिरकर भी मैंने नहीं मानी मैंने हार।

एक दिन मैं पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर थी
डरने से किया इनकार
कूदी मैं, फड़फड़ाए पंख
देखा कि जमीन मेरे नीचे है,
हवा मेरे पीछे है,
उड़ रही थी मैं, हवाओं के साथ।

Like 523 people like this.

Posted by Prabhat Ranjan at 8:57 AM

+1 +7 Recommend this on Google

Labels: amrit ranjan, अमृत रंजन

29 comments:

सुशील कुमार जोशी January 31, 2014 at 10:03 AM

वाकई उम्र के हिसाब से गजब की सोच झलक रही है !
वाह !

Reply

yashoda agrawal January 31, 2014 at 11:07 AM

आपकी लिखी रचना शनिवार 01/02/2014 को लिंक की जाएगी..... ***http://nayi-purani-halchal.blogspot.in कृपया पधारें....धन्यवाद!***

Reply

pra5hant January 31, 2014 at 12:26 PM

इनमें एक अच्छे कवि की संभावना दिख रही है ..प्रभात भाई आप धन्यवाद के पात्र हैं कि नन्हें प्रतिभा को आपने कुंठित होने से बचा लिया ..एक नयी आस जगाकर आपने उनके आकाश को एक विस्तार दे दिया। अमृत को उनकी रचनाओं के लिए बधाई ..लिखते रहें अमृत !

Reply

madhu January 31, 2014 at 1:17 PM

अमृत बेटे, खूब सही, मार्मिक और सटीक लिखा है। मासूमियत कितना सच बोलती है। बहुत बहुत बधाई।

Reply

राजीव कुमार झा January 31, 2014 at 1:22 PM

बहुत सुन्दर प्रस्तुति...!
आपकी इस प्रविष्टि् की चर्चा कल शनिवार (1-2-2014) "मधुमास" : चर्चा मंच : चर्चा अंक : 1510 पर होगी.
सूचना देने का उद्देश्य है कि यदि किसी रचनाकार की प्रविष्टि का लिंक किसी स्थान पर लगाया जाये तो उसकी सूचना देना व्यवस्थापक का नैतिक कर्तव्य होता है.
सादर...!

Reply

mannkikavitaayein January 31, 2014 at 1:37 PM

बिस्तर पर बैठे हुए
सोचते हैं।
इतना उजाला क्यों है भाई!
क्या बात है. अमृत को बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं.

Reply

rakesh January 31, 2014 at 1:58 PM

bahut hi achhe...chota hua to kya hua ghaav kare gambheer.....dhanywaad

Reply

induravisinghj January 31, 2014 at 2:15 PM

एक दिन मैं पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर थी
डरने से किया इनकार
कूदी मैं, फड़फड़ाए पंख
देखा कि जमीन मेरे नीचे है,
हवा मेरे पीछे है,
उड़ रही थी मैं, हवाओं के साथ।
सुंदर ....सहज ...गहन भाव समेटे हुए रचनाएँ ...!!!

Reply

अनुराग अन्वेषी January 31, 2014 at 2:43 PM

जमीन मेरे नीचे है, हवा मेरे पीछे है, उड़ रही थी मैं, हवाओं के साथ। हां अमृत, हवाओं के साथ उड़ना वे सभी जानते हैं, जिनके हौसले बुलंद होते हैं, पर जिनके हौसले और बुलंद होते हैं वह खिलाफ बह रही हवा के बावजूद उड़ने में कामयाब होते हैं। अंग्रेजी से चकाचौंध हुई पीढ़ी के बीच अगर हिंदी में इतनी प्यारी अभिव्यक्ति करने की क्षमता दिखे तो वह खिलाफ बहती हवा में उड़ने के समान ही दिखता है। यह हौसला बनाए रखो। :-)

Reply

miracle5169@gmail.com January 31, 2014 at 3:38 PM

bahut khoob , ashesh shubhkaamanaayeN,du'aayeN,behad umeed jagata hu'aa aane wala KAL.

Reply

' मिसिर' January 31, 2014 at 4:16 PM

परिपक्व सोंच की सुन्दर कविताएँ .....सहज और संतुलित भाषा ...अमृत रंजन को हार्दिक बधाई ।

Reply

shailja January 31, 2014 at 4:20 PM

wah beta ji khush ho gya...bahut badhaai amrit aur subhkamnayen..likhate rahiye

Reply

Bhavna Mishra January 31, 2014 at 4:28 PM

बहुत सुन्दर !! बगैर परिचय के अगर ये कविता पढ़ी जातीं तो शायद न ही बूझ पाते कि अमृत की उम्र मात्र ग्यारह वर्ष है. बधाई और शुभकामनाएँ !

Reply

shikha varshney January 31, 2014 at 5:31 PM

खड़े होकर ताली बजाने का मन है.

Reply

Pratibha Katiyar January 31, 2014 at 7:47 PM

Bahut Pyar Amrit ko!

Reply

बाबुषा January 31, 2014 at 8:10 PM

ख़ूब सारा लाड़ !

Reply

Kamal Choudhary January 31, 2014 at 8:53 PM

बची रहेगी कविता . अनंत शुभकामनाएँ !!!!

Reply

kuldeep pushpakar January 31, 2014 at 10:38 PM

कोमल मन की कोमल रचना.....
कितना अद्भुत अमृत है .....
अद्भुत अमृत अद्भुत .....आपको ढेरों आशीष .....

Reply

गिरिजा कुलश्रेष्ठ January 31, 2014 at 10:44 PM

इतनी परिपक्व रचनाएं पढकर एकाएक तो विश्वास नही होता कि रचनाकार जी ग्यारह वर्ष के हैं लेकिन भावों की मासूमियत से बखूबी स्पष्ट होता है । नन्हे रचनाकार को अनन्त शुभकामनाएं । और आपको धन्यवाद ऐसी प्रतिभा को सामने लाने के लिये ।

Reply

Kalipad Prasad February 1, 2014 at 3:15 PM

umra kii drishti se bachcha hai par soch paripakka hai .bahut sundar .hardik subhkaamnayen .
सियासत “आप” की !
वसन्त का आगमन !

Reply

Onkar February 1, 2014 at 3:17 PM

विश्वास नहीं होता कि छोटे से बच्चे ने इतना बेहतरीन लिखा है. बधाई.

Reply

कविता रावत February 1, 2014 at 7:42 PM

मन की बहुत गहराई में उतरती हैं ये कवितायें ..
अमृत रंजन ऐसे ही अपनी पढ़ाई के साथ निरंतर लिखते रहे ..हमारी हार्दिक शुभकामनायें ..

Reply

Aparna Sah February 2, 2014 at 8:32 PM

oh...kitni sarthakta hai..man ko chhu gai...

Reply

संगीता कुमारी February 2, 2014 at 9:07 PM

बहुत-बहुत शुक्रिया प्रभात जी। साथ ही सभी दोस्तों का शुक्रिया अमृत को ढेरों स्नेह और आशीष देने के लिए। मेरा बेटू बहुत उत्साहित है अपने लिए इतनी प्रतिक्रियाओं को देखकर। बल्कि कहूँ तो मेरे हाथ नहीं आ रहा है।पूरे घर में अपनी कॉलर ऊँची करके घूम रहा है।

Reply

हेमा दीक्षित February 4, 2014 at 7:18 PM

बहुत खूब विचार और प्रवाह के साथ लिखी कविताएं है ... कवि को वास्तव में जन्मना कवि होने की बधाई ...

Reply

sulagti aahein February 15, 2014 at 5:48 PM

अति उत्तम कवितायें ..... उम्र छोटी विचार बहुत बड़े .....

Reply

Avinash Singh February 15, 2014 at 5:49 PM

bahut sundar kavitayein....

Reply

Ravishankar Shrivastava March 13, 2014 at 12:34 PM

वाह! वाह!!

Reply

Swati Singh February 22, 2015 at 12:44 AM

Wish u all d success buddy,देखो;तुम्हारे पीछे भी हवा है,और नीचे जमीन,बस एक मुकम्मल परवाज की जरुरत है।

Reply

Enter your comment...

Comment as: Google Account

Publish Preview

----ADVERTISEMENT----
Safari Power Saver
Click to Start Flash Plug-in
Want to watch a noise channel?
Or a news channel?

किताबों की दुनिया

7वीं के छात्र ने किया चेतन भगत की किताब 'हाफ गर्लफ्रेंड' का रिव्यू

Tweet 83
ई-मेल राय दें
प्रिंट
अ अ अ

aajtak.in | नई दिल्ली, 9 अक्टूबर 2014 | अपडेटेड: **14:18 IST**

टैग्स: बुकरिव्यू | हाफगर्लफ्रेंड | चेतनभगत | किताब

Rented Flats In Delhi
Plots, Properties, Flats For Sale. Listing Of Real Estate Agents@Askme

अमृत रंजन

पुणे डीपीएस में कक्षा सात में पढ़ने वाले अमृत रंजन ने चेतन भगत की नई किताब 'हाफ गर्लफ्रेंड' का रिव्यू किया है. यह रिव्यू हमने प्रभात रंजन के साहित्यिक ब्लॉग 'जानकीपुल' से लिया है.

यह मेरी पहली चेतन भगत की किताब थी और शायद यह आखिरी भी होगी. चेतन भगत, मैं आपकी बुराई या कुछ, नहीं कर रहा लेकिन इस किताब की कहानी क्या है? एक लड़का था माधव, एक लड़की थी रिया. माधव को दोस्ती से बढ़कर कुछ और चाहिए था. लेकिन रिया बस एक दोस्त बनना चाहती थी. मुझे पूरी किताब पढ़ते हुए लगा कि सर चेतन भगत इस कहानी को बस खींचते जा रहे हैं. कहानी के मसाले में उपन्यास.

मैं जब किताब के बीच में था, तो एक स्थान आया जहां सर चेतन भगत ने अपनी ही तारीफ की है, यह उन्होंने तब किया जब रिया माधव को अंग्रेजी सीखने के गुर बता रही थी. उन्होंने रिया से बुलवाया कि उसे अंग्रेजी की आसान किताबें पढ़नी चाहिए जैसे कि लेखक चेतन भगत की किताबें. मुझे इस बात पर बहुत हंसी आई, खुद की किताब में अपने ढोल. वह अपने नाम की जगह अर्नेस्ट हेमिंवे या चार्ल्स डिकेन्स या किसी का नाम ले सकते थे.

मुझे एक बात इस किताब में बहुत बुरी लगी. लड़का अंग्रेजी नहीं जानता, हिन्दी में बात करता है. इस बात में क्या खराबी है? उसके दिल को, उसकी भाषा को, सब वह लड़की बदल देती है. चेतन भगत को हिन्दी की तरफ अपनी नाव की दिशा खींचनी चाहिए थी. हां मैं मानता हूं कि अंग्रेजी लेखक हैं लेकिन फिर भी, भारतीय हैं. जो चेतन भगत के प्रशंसक हैं, माफ कीजिएगा. अब किताब की अच्छी बातों पर आता हूं. माधव के दोस्त जो उसे सलाह देते हैं वह मुझे बहुत 'सच्ची' लगी. मेरे दोस्त भी मुझे ऐसी ही सलाह देते हैं जिससे मैं हमेशा प्रिंसिपल की ऑफ़िस के सामने खड़ा रहता हूं.

माधव बिहार का एक सीधा-सादा लड़का है जो बस पढ़ने आया था. लेकिन पहले ही दिन उसकी नजर एक खूबसूरत लड़की पर पड़ी और वह उस पर फिदा हो गया. एक दिन उस लड़की को माधव अपने हॉस्टल में ले आया. उसने यह बात अपने दोस्तों को बताई और वे उससे सवाल पूछने लगे कि उसने उस लड़की के साथ क्या-क्या किया. इसी से सारी कहानी शुरु हुई और खत्म उस दिन हुई जब रिया के साथ वह कुछ करना चाहता था और रिया ने मना कर दिया और माधव ने गुस्से में आकर कहा, 'देती है तो देवरना कट ले.' उस दिन के बाद उनका रिश्ता टूट गया. रिया की शादी जल्दी हो जाती है, न चाहते हुए भी उसे लंदन के रोहन से शादी करनी पड़ती है जो रिया को बहुत सताता है. उधर अकेला माधव बस पढ़ाई करता रह गया.

कहानी का दूसरा हिस्सा माधव के बिहार लौटने का है. अपनी मां के कारण वह बिहार लौटता है. फिर स्कूल में टॉयलेट फैसिलिटी के लिए गेट्स फाउंडेशन को बुलाता है. कहानी में शौचालय पर जोर कुछ ज़्यादा ही दिखता है, पता नहीं क्यों? और उस फंक्शन में बोलने के लिए अंग्रेजी सीखने पटना जाता है. जहां उसका सामना रिया से होता है. माधव की फिर वही कोशिश कि किसी तरह वह रिया को हासिल कर ले. दिल्ली-बिहार के बाद अमेरिका भी कहानी में आता है. आखिर में मुझे तब अच्छा लगा जहां रिया और माधव की शादी हो जाती है और उनका एक बेटा होता है. माधव और रिया उसे बास्केटबॉल खेलना सिखा रहे होते हैं. उनका बेटा बहुत कोशिश करता है और आखिर में हार मान जाता है. लेकिन माधव उसे कहता है कि सफल होते रहने के लिए लगातार कोशिश करना होता है. मुझे एक बात समझ नहीं आई. इस किताब से क्या सीख मिलती है? कोशिश करते रहना, लेकिन माधव ने किस चीज की कोशिश की. इस बात को अपने मन में दोहरा कर देखिए.

अन्य अपडेट लगातार हासिल करने के लिए हमें फेसबुक पर ज्वॉइन करें. आप दिल्ली आजतक को भी फॉलो कर सकते हैं.

For latest news and analysis in English, follow IndiaToday.in on Facebook.

Web Title : book review of chetan bhagats half girlfriend by a seventh standard student

इंडिया टुडे से
ये हैं बॉलीवुड के इंटरनेशनल खिलाड़ी
विज्ञापन

Hindi English
STAY CONNECTED
FOLLOW AAJ TAK
Like
Share

जरूर देखें

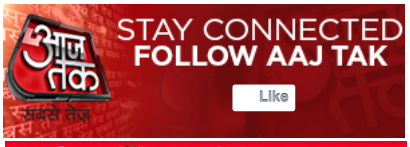

दाऊद इब्राहिम के निशाने पर थे ललित मोदी: महमूद आब्दी

जिस गांव शहीद हुए थे जवान, आज सूनी हैं उसकी गलियां

इटली में चला सोनम के स्टाइल का जादू

इंस्टाग्राम पर ललित मोदी कुछ यूं बिखेरते हैं 'जलवा'

Keyword : Book review half girlfriend, Chetan Bhagat, 7th class student

भारत मैट्रीमोनी - Register Free!

162 6 आपकी राय 24 Like 3k
Tweet 83 g+1 9

You May Like

Sponsored Links by Taboola

175 अरब डॉलर की कंपनी का CEO है ये भारतीय, 516 करोड़ रुपए है सैलरी
Money Bhaskar

The Next Generation of Scientists Are Here
Intel iQ

Calculate: How Much Are You Overpaying Your Home Loan EMI - Results Will Shock You
Big Desicions

64-bit Android* and Android Run Time
Intel

Robust Exterior Stance, Well Equipped Interiors & Impressive Fuel Economy
Autoportal

5 Ways to Increase Your Annual Income
Scripbox

From The Web

- **This guide will teach you how to blink an LED using the Arduino* IDE on Intel Edison and Intel Ga...** (Intel)
- **मोबाइल से पता करें, आपका आधार कार्ड बैंक से जुड़ा है या नहीं, ये है तरीका** (Money Bhaskar)
- **Wearable Technology Doesn't Have to Stand Out In a Bad Way** (Intel iQ)
- **Calculate: How Much Are You Overpaying Your Home Loan EMI - Results Will Shock ...** (Big Desicions)
- **Investing in SIP Can Be So Simple, You Can Call it a Child's Play!** (My Universe)

We Recommend

Promoted Links by Taboola

- **आसाराम की पत्नी का चौंकानेवाला खुलासा**
- **राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का केजरीवाल पर निशाना**
- **आसाराम के गंदे खेल में भागीदार थी साधिकाएं**
- **बदल गया तत्काल टिकट बुकिंग का समय**
- **रिश्ते हुए तार-तार, ससुर ने बहू को किया गर्भवती**

मोबाइल पर ताजा खबरें, फोटो, वीडियो देखने के लिए जाएं **http://m.aajtak.in** पर.

डाउनलोड करें आजतक एप्लीकेशन

Liberty Official Online Store
Buy Liberty Footwear with 25% Off + COD + Free Shipping. Comfort is here!

आपकी राय

हिन्दी या English में कमेंट दें:

- Hindi (English में टाइप करें हिंदी दिखेगा. जैसे meri raai hai ki टाइप करते ही ये वाक्य- मेरी राय है कि में बदल जाएगा.)
- English
- हिंदी यूनिकोड

Post to Facebook

POST COMMENTS

Shank

आज के7 7 7 7 शत

त7 7 7 7 रों में देखें मिथुन चक्रवर्ती का जीवन

धर्म। रिलेशनशिप। चकल्लस। सोसाइटी। और भी...

ख़बरें अब तक और भी...

सुषमा-ललित विवाद पर बोले अरुण जेटली, सरकार के सभी मंत्री फैसले लेने में सक्षम'

बिहार में नीतीश बनाम नेंद्र मोदी पर सुशील मोदी ने उठाए सवाल

आनंद शर्मा बोले- भगोड़े हैं ललित मोदी, अब हो SIT जांच

हमारे हथियार सजावट के लिए नहीं हैं पाक

For News in English

+1 0 More Next Blog» Create Blog Sign In

अनुभव

मुझे आदमी का सड़क पार करना हमेशा अच्छा लगता है क्योंकि इस तरह एक उम्मीद - सी होती है कि दुनिया जो इस तरफ है शायद उससे कुछ बेहतर हो सड़क के उस तरफ। -केदारनाथ सिंह

Sunday, March 06, 2011

अमृत रंजन का आम का पेड़

ब्लॉगर दोस्त अमृत

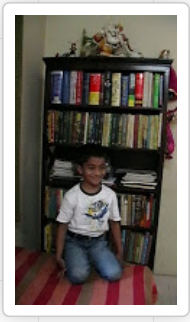

किताब घर के साथ दोस्त

आम का पेड़ अब केवल गांव में ही नहीं दिखता, बल्कि शहरों में भी दिखने लगा है। आम्रपाली, मल्लिका जैसे तमाम हाईब्रिड नस्ल के आम के पेड़ अब आप गमले में भी उगा सकते हैं, लेकिन यहां मैं जिस आम के पेड़ की कथा बांचने जा रहा हूं वह मुझे वेब की दुनिया में मिला। वो भी तीसरी कक्षा में पढ़ रहे एक बच्चे का। बच्चे का नाम है अमृत रंजन। मतलब ब्लॉग राइटर अमृत रंजन भाया आम का पेड़। अपने बारे में यह बच्चा कहता है- ***''मैं अमृत हूँ। पुणे में रहता हूँ। डीपीएस में तीसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। कंप्यूटर पर हिन्दी में लिखना आसान है और यह सब मैं खुद लिखता हूँ।''***

अमृत की ताजातरीन पोस्ट स्केच पर आधारित है, जिसका टाइटल उन्होंने रखा है- **शेर, बंदर और बूढ़ा।** लेकिन मुझे जो पोस्ट सबसे अधक पसंद आ रही है, वह है- **किताब घर**। मेमोरी लेन की बात करने वाले हम जैसे लोग, जिन्हें पुरानी यादों को शब्दों के जरिए पढ़ने में सुकून मिलता है, उसे यह पोस्ट जरूर पढ़नी चाहिए। यहां अमृत ने अपने पिता और दादा जी के शौक को शब्दों में ढाला है। वह लिखते हैं-

'' मेरे पापा ने यह बुक शेल्फ ख़रीदी है। मेरे किताब की जगह बीच वाले खटाल में है। मेरे पास तो बहुत कम किताबें हैं लेकिन मेरे पापा के पास बहुत सारी किताबें हैं। और मेरे दादाजी के पास पूरी चार-पाँच अलमारी भरी हुई है। उन्होंने सारी किताबें पढ़ ली है। मुझे भी वह सारी किताबें पढ़नी है। जब मैं वह पढ़ लूँगा, तब दादाजी मुझे बहुत प्यार करेंगे। फिर जब मैं अपने गाँव से वापस पुणे आ जाऊँगा, तब दादाजी मुझे बहुत याद करेंगे। अभी मैं पुणे में ही हूँ। दादाजी का भी किताबों से भरा घर और यहाँ पुणे में भी ढेर सारी किताबें। यही है मेरा किताब घर।''

इस पोस्ट में उन्होंने अपने नए बुक शेल्फ की तस्वीर भी लगाई है (जिसे देखकर मुझे भी खरीदने का दिल कर गया)।

अमृत शरारती है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता क्योंकि हमारी मुलाकात नहीं हुई है लेकिन उसके एक पोस्ट को पढ़ने के बाद ऐसा कह सकता हूं जनाब शातिर हैं, इसमें कोई शक नहीं। उनकी यह पोस्ट है- **'मेरे मित्र**। इसमें बच्चों की शरारत के अलावा जिस नई बात पर मेरी निगाहें टिकती है वह सोसाइटी है। दरअसल इन दिनों शहर और सोसाइटी की कहानी बांचने की वजह से यह शब्द मेरा यार बना हुआ है। अमृत लिखते हैं-

...वह आजकल दूसरी सोसाइटी में रहने चला गया है। वह मुझे बहुत याद आता है। मेरे दूसरे मित्र का नाम है अक्षज..।

यहां सोसाइटी के बारे में अमृत ने ऐसे लिखा मानो वह एक दूसरा शहर हो। दरअसल बच्चों के लिए यह लिखना सच भी है, क्योंकि वे दूरियों को दिल से अनुभव करते हैं।
अमृत के बहाने ही मैं जान सका कि बच्चे भी ब्लॉग का इस्तेमाल कर सकते हैं, वो भी अलग ढंग से। आज जब नजर गई तो इसे मैंने अपने फेवेरिट लिंक में जोड़ भी दिया, इस तरह अमृत मेरे आभासी दोस्त बन गए हैं। एक ऐसा दोस्त जिससे मुलाकात नहीं हुई है, जिसके बारे में कुछ नहीं पता है, पता है तो बस यही कि वह कम्प्यूटर पर हिंदी में लिखता है....।

ब्लॉग का पता है- http://aamrataru.blogspot.com/

Posted by Girindra Nath Jha/ गिरीन्द्र नाथ झा at Sunday, March 06, 2011

+1 Recommend this on Google

Labels: अनुभव

Reactions: ठीक (0) मजेदार (0) उम्दा (0)

2 comments:

Anonymous said...

आप ब्लॉग पोस्ट को लेकर खूब प्रयोग करते हैं। कंटेट को लेकर इस तरह के एक्सपेरिमेंट मौजू हैं। शुक्रिया। अगले पोस्ट का इंतजार रहेगा

10:01 PM

alok dixit said...

अंदाज़-ए-गुफ़्तगू

Girindra Nath Jha/ गिरीन्द्र नाथ झा
Purnea, Bihar, India

यह ब्लॉग अंचल, शहर और आदमी की कथा है, वहीं एक बनते किसान की डायरी भी है। अपना ईमेल पता है- girindranath@gmail.com और बतियाने का नंबर है-09661893820

View my complete profile

"अनुभव पर प्रकाशित किसी भी रचना का कहीं भी किसी भी रूप में प्रयोग न करें। इजाज़त नहीं है। सर्वाधिकार सुरक्षित है।"

बीबीसी

अनुभव के साथी

Join this site
with Google Friend Connect
Members (118) More »

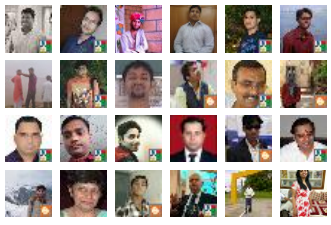

Already a member? Sign in

Follow @girindranath

जनसत्ता में

inextlive

Dubai

Invest in one of the hottest property markets in the world

Schedule free consult

मन चला आम की ओर

– प्रतिभा कटियार

i Share

जिद का तुम्हारा जो परदा सरकता...

नरेंद्र नाद

जिद हमेशा निगेटिव नहीं होती, पॉजिटिव भी होती है. जिद में आ मिले अहंकार को जरा हटाकर देखिये, इसी जिद से दुनिया भी बदल रही है.

अपनी राय आप editor@inext.co.in पर mail कर सकते हैं. आप पत्र द्वारा भी हमसे जुड़ सकते हैं. इसे डाक से भेजें या i next box में डालें. हमारा पता है :- i next, सर्वोदय नगर, ... , सिविल लाइंस, कानपुर

i Inside

Paid in full with one glass of milk

Once upon a time there was a poor boy named Howard Kelly. He was having a hard time so he became a door-to-door salesman to pay his school fees. But selling is a hard job. One fine day he was ravenous but had no money for food. He then decided to ask for a meal at the next house. When he knocked a pretty lady came out and, feeling nervous, he only asked for water.

The lady could see hunger on the boy's face so she brought him a large glass of milk. The boy was astonished but gulped it down. He then asked the lady, 'how much do I owe you?' The lady replied, 'You don't owe me anything. I have been taught never to accept payment for an act of kindness'. The boy was extremely touched and thanked her from the bottom of his heart. Many years later Dr Howard Kelly was called to attend a critically ill woman when the local doctors were clueless about her illness. When Dr. Kelly first heard about the town she came from, he remembered the incident of the milk so he rushed to check the patient.

Howard Kelly immediately recognised her and started doing everything in his capacity to save the woman's life. After giving special attention to the case for quite some time, the lady started getting better. When it came to the matter of bill payment, Dr. Kelly requested hospital authorities to pass the final bill to him. After carefully examining the bill details, he scribbled something on the edge of the paper and passed the bill to patient's room. She was scared to have a look at the bill knowing it would be more than she could afford. But when she finally opened the bill, she saw something written on the side of the bill, 'Paid in full with one glass of milk'.

Great Lakes ePGPM Course

Transition To Managerial/Leadership Roles Without Quitting Your Job!

Citibank Credit Cards
Choose the one that best suits your lifestyle

FREE FLIGHTS
Citibank PremierMiles Credit Card

FREE FUEL
IndianOil Citibank Credit Card

FREE SHOPPING
Citibank Rewards Credit Card

Apply now!
It takes just 5mins

T&Cs apply

8+1 10 More Next Blog»

जानकीपुल

8+1 14

Pages

- Home
- वैधानिक
- संपर्क

Search your blog

Search

Blog Archive

Blog Archive

Followers

Join this site
with Google Friend Connect

Members (1465) More »

Already a member? Sign in

Thursday, February 19, 2015

अमृत रंजन की नई कविताएं

अमृत रंजन की कविताएं तब से पढ़ रहा हूँ जब वह कक्षा 6 में था. अब वह कक्षा 7 में है. डीपीएस पुणे के इस प्रतिभाशाली की कविताएं इस बार लम्बे अंतराल के बाद जानकी पुल पर आ रही हैं. इससे पहले आखिरी बार हमने इसे तब पढ़ा था जब इसने चेतन भगत के उपन्यास 'हाफ गर्लफ्रेंड' की समीक्षा लिखी थी. इसकी कविताओं की भावप्रवणता, प्रश्नाकुलता और उनके बीच अपनी वैचारिक राह बनाने की आकुलता बार बार आकर्षित करती है. आप भी पढ़िए और राय दीजिए- मॉडरेटर.

==

(1)

कृष्ण तुमने वह कर दिखाया

हे श्री कृष्ण
तुम हमारे भगवान हो।
तुमसे बड़ा इस पूरे संसार में कोई नहीं है।
तुम भिन्न-भिन्न रूप धारण
करके पृथ्वी पर आते हो।
तुम धर्म और सच्चाई की पूजा करते हो।
फिर...क्यों
तुमने द्रोण
तुम्हारा भक्त,
जो अपने बेटे के खोने के झूठ से,
तपस्या करने चला गया था।
अपने हथियार, सब कुछ फेंक दिए थे।
और उसे तुमने बेरहमी से मार गिराया।
यहाँ धर्म और सच दोनों टूटे।
माना एक गलती हुई,
सबसे होती है।
एक भगवान से भी।
लेकिन तुमने कर्ण,
जिसके रथ का पहिया
मिट्टी में फंस गया था।
उसे मार गिराया।
माना कि दूसरी गलती हुई,
सबसे होती है,
एक भगवान से भी।
लेकिन भीष्म,
तुम जानते थे कि भीष्म
तुम्हारे जैसा नहीं है,
वह धर्म और सच के रास्ते चलता है।
इसलिए शिखण्डी
जो एक और पैदा हुई थी
उसे भीष्म के सामने खड़ा कर दिया।
भीष्म ने तलवार फेंक दी

लघु प्यार की बड़ी कहानियां

कोठागोई: मेरी नई किताब

Easy Way To Lose Weight

Lose Upto Kgs in Just Week With Health Tot Now In Delhi!

Popular Posts

अरुंध की का
अंग्रेजी कवयि सुब्रम कविता
समाचार साहित्य वार्षिकी गहरे इंगितों वाली...

गौरव कहानी लड़के
यही व जिसके भारती
प्रसिद्ध युवा लेखक गौरव कहानी संग्रह को प्रकाशित टालमटोल किया. कहा ग

क्या 'वासकसज्जा' हिंदी व अश्लील उपन्यास है?
इमरजेंसी के बाद कोठे का लगा था. इस बात के ऊप

और तभी तुमने अर्जुन को उन्हें मारने बोला।
लेकिन यह तीसरी गलती
इंसान नहीं कर सकता,
वह एक भगवान ही कर सकता है।
हम इसलिए तुम्हारी पूजा करते हैं
तुमने वह कर दिखाया
जो इंसान नहीं कर सकता।
(सी. राजगोपालाचारी की महाभारत (मूल) पढ़ने के बाद)
(08-01-2015)

(2)

रोज़ा

आगे बैठती थी वह उसके
मालूम नहीं कि कैसे गणित, हिन्दी, अंग्रेजी
सब उसकी जुल्फ़ों को देखकर गुजर जाते।
उसे हर दिन स्कूल
जाने का मन करने लगा।
रोज़े का समय आया,
वह कुछ नहीं खाती
उसके साथ वह भी कुछ नहीं खाता।
एक दिन बड़ा लज़ीज़ कोफ़्ता लाई थी वह,
सब कुछ मैं ही खाए जा रहा था।
वह रोक नहीं सका और एक कोफ़्ता खा लिया।
जब मैं स्कूल ख़त्म होने के बाद उससे मिला
तो वह रो रहा था,
"यार आज मैं उसका साथ नहीं दे पाया।"

(3)

खुशी का ज़ीना
हताश में एक आदमी नीचे बैठ गया,
उस समय उसके दिमाग में कुछ नहीं आया,
बस खुशी के ज़ीने ने उसे घेर लिया।
दिन रात वह सोचता रहता था
खुशी के बारे में
कुछ भी कर सकता था वह अपनी
खुशी के लिए,
एक तिनके भर खुशी
उसकी जिंदगी का मकसद बन गई।

उसने एक दिन दुख को मरते देखा,
हालात में पड़ गया वह।
जो दुख उसे अभी भी
हताश से तड़पा रहा था
उसके सामने,
उसके पैरों पर,
उससे मदद माँग रहा था।

उसने अपने दिल से सोचा
मन से नहीं।
उसने दुख की जान बचाई,
यह करने से उसके दिल को शांति मिली,
दुख का हाथ उसके कंधे पर था,
दोनों एक साथ चले
अहसास को दोनों में से कोई नहीं जानता था,
साथ चलने को जानते थे।
(04-10-2014)
----
(4)
चीड़

ध्यान
इमरजें
के बाद
के पारं

शरतच
और च
मुजफ्
शरतच
मुजफ्
गये थे.
रूप में उनकी प्रसिद्धि नहीं
हालाँकि उन्होंने लिखना शु
था. वि...

मनोहर
से एक
बातची
सन 2(
आका
अभिले
मैंने मनोहर श्याम जोशी
लंबा इंटरव्यू लिया था। उ
जीवन के...

मुंबई
की अ
जी का
मुम्बई
को ले
ब्लॉक
लिखने वाले पत्रकार से कि
एस. हुसैन जैदी की एक
'मुम्बई की माफ...

Total Pageviews

697

झरोखा

जंगलों की सैर करने गया था
आवाज़ों को पीने की कोशिश की थी
लेकिन
पेड़ों ने बोलने से इन्कार कर दिया।
चीड़ की चिकनी छाल को छुआ
लेकिन
उसने मेरे हाथों में काँटे चुभा दिए।

(5)
दिल के पन्ने
इन पन्नों को कई बार पढ़ चुका हूँ,
सुन चुका हूँ।
लेकिन इनमें बस
कुछ शब्द सुनाई पड़ते हैं,
पूरा वाक्य कभी नहीं।

इन नटखट शब्दों से वाक्य को
बेतहाशा जानने का मन करता है,
लेकिन वाक्य कहीं खो जाते,
आँखों के सामने नहीं आना चाहते मेरी।
यह किसके दिल के पन्ने हैं?
कुछ कहना ही नहीं चाहते।

शब्द स्पष्ट होने लगते हैं कि
एक लड़की इन पन्नों को
छीन ले जाती है।
मैं समझ जाता हूँ।
यह उस औरत के पन्ने थे
जो कहानी कहना नहीं जानती।
(12 - 09 - 2014)

(6)
अव्वल सपनों की दुनिया
माँ चाहती थी परीक्षा में अव्वल आऊँ
पा की भी यही चाहत थी।
लेकिन मैं यह नहीं चाहता था।
मैं बस सपनों को देखने की दौड़ में
अव्वल आना चाहता था।
ज़रा सोचिए कि मैंने सपना ही
क्यों चुना?
सपना,
इसलिए कि यह वही चीज़ है
जिसकी आप पूरे दिल से चाहत करो,
तो भी यह अपना मुँह मोड़ के,
किसी और के दिल में
जगह बनाकर
आखिर में
मुँह मोड़ के चली जाएगी।
मैं इस सपने को मना कर,
सपना पूरा करूँगा।
और आख़िर में
सपने से मुँह मोड़ के,
काली रात में

समा जाउँगा।

Like 213 people like this.

Posted by Prabhat Ranjan at 8:05 AM

+1 +10 including Prabhat

Labels: amrit ranjan, अमृत रंजन

6 comments:

बाबुषा February 19, 2015 at 8:36 AM

फ़ैन हूँ मैं इस बच्चे की. जानकीपुल को दिल से शुक्रिया इस की उँगली थामने के लिए.

Reply

vijay sharma February 19, 2015 at 9:17 AM

Tumhara shukriya prabhat ranjan ...mujhe samvedna gati hui lagti hai tumhari kavitayon main.

Reply

Swati Singh February 19, 2015 at 5:07 PM

I just marvel at the very keen observation and very simple explanations which can be understood with no extra effort,i also salute the candid smartness when he says about Bhishma Pitamah that "तुम जानते थे कि भीष्म तुम्हारे जैसा नहीं है",my best wishes for this prdigy.

Reply

Swati Singh February 21, 2015 at 4:32 PM

आज तुम्हारी 'रोजा' ने बरबस खींच लिया मुझे,विस्मित हूँ यह देख कर कि एक बालक ही इतना प्रबुद्ध बाल मनोविज्ञानी कैसे हो सकता है,तुम्हें मेरा स्नेहिल नमन।

Reply

दीपिका रानी February 23, 2015 at 11:42 AM

पहले से बहुत ज्यादा बेहतर हुई हैं अमृत की कविताएं। परिपक्वता भी दिख रही है और पैनी नजर भी। साथ ही संवेदनशीलता जो किसी भी लेखक-कवि के साथ-साथ हर इंसान में होना चाहिए।

Reply

Rashmi Bhardwaj March 27, 2015 at 1:28 PM

अद्भुत है यह कविताएँ। इतनी छोटी सी उम्र में इतनी संवेदनशील दृष्टि। बहुत बधाई अमृत, खूब लिखो। रोजा बार बार पढ़ी, बहुत ही सुंदर लिखा है तुमने।

Reply

Enter your comment...

Comment as: Google Account

Publish Preview

Links to this post

Create a Link

Newer Post Home Older Post

Subscribe to: Post Comments (Atom)

google6d31c4cdb732b973.html

g+1 5 More Next Blog»

जानकीपुल

Tuesday, June 10, 2014

अमृत रंजन की कविताएं

जनवरी में हमने डीपीएस पुणे में कक्षा छह में पढने वाले बालक अमृत रंजन की कविताएं प्रकाशित की थी. अब वह बालक कक्षा 7 में आ गया है और उसकी कविताओं की जमीन पकने लगी है. बालकोचित खिच्चापन उसमें अभी भी है लेकिन अनुभव और सोच का दायरा विस्तृत हुआ है. उसकी कुछ कविताएं पढ़िए और उसे बेहतर भविष्य की शुभकामनाएं दीजिए- मॉडरेटर
===

सपना

अंधेरी रातों में
सोकर भी जगा रखता यह,
सपना...
कभी-कभी सोचता हूँ,
कि किस दुनिया में ले जाता यह,
सपना...
टुकुर-टुकुर मन में झाँकता यह,
सपना...
रात को मरने से बचाता यह,
सपना...
मन के पायलों को छनछनाता यह,
सपना...
मन की बंदूक को चलवाता यह,
सपना...
एक लंबी छलाँग लगवाता यह,
सपना...
चाँद पर पहुँचाता यह,
सपना...
सपनों के बिना ज़िन्दा नहीं रह पाएगा यह इंसान।
तो अपना लो इस सपने को
रस्ता तुम्हें अपने आप पता चल जाएगा।

[१० फ़रवरी २०१४]

सफ़र बिना लक्ष्य के

दिन-रात सोचता रहता हूँ,
कब जाऊँगा सबसे बड़े सफ़र पे,
सफ़र बिना लक्ष्य के।
सुनसान, शांत यही सोचा है
मैंने उसके बारे में।
वह सफ़र जिसमें रस्ता न हो,
बस धूप का पीछा करते रहें।
पहाड़ों के बीच से

g+1 14

Pages

- Home
- वैधानिक
- संपर्क

Search Your Blog

Search

Blog Archive

Blog Archive

Followers

Join this site
with Google Friend Connect

Members (1465) More »

Already a member? Sign in

लघु प्यार की बड़ी कहानियां

कोठागोई: मेरी नई किताब

Easy Way To Lose Weight

Lose Upto Kgs in Just Week With Health Tot Now In Delhi!

Popular Posts

अरुंधा की का अंग्रेजी कवयि सुब्रमणि कविता समाचार साहित्य वार्षिकी गहरे इंगितों वाली...

गौरव कहानी लड़के यही व जिसके भारती प्रसिद्ध युवा लेखक गौरव कहानी संग्रह को प्रकाशित टालमटोल किया. कहा गर

क्या 'वासकसज्जा' हिंदी व अश्लील उपन्यास है?
इमरजेंसी के बाद कोठे का लगा था. इस बात के ऊप

हवाओं को खींच के
चल दें हम
सफ़र बिना लक्ष्य के।
लेकिन जब भी मन को मनाते हैं
"तैयार हो जा एक सफ़र के लिए"
मन मान जाता है
लेकिन जब हम
धूप, सुनसान और शांत रस्ते पर
निकल रहे होते हैं
तभी मन बोलता है
“अरे भाई, नक्शा मत छोड़ जाना।”
(२७ फरवरी २०१४)

भोर

वह रात आज याद करता हूँ,
हाँ, वही काली रात ।
उस रात की भूल-भुलैया में मैं
खो गया था ।
तभी अचानक,
मेरी आँखों ने बंद होने की ज़िद की ।
जबरदस्ती,
आँखों से मैंने परदे हटाए ।
देखा कि मुझपर रौशनी की वह
गरमाहट ऐसे आई
जैसे,
जिस जगह पर रेगिस्तान भी
गरमी से तड़पता है,
उस जगह पर पानी ।
उसी रौशनी का पीछा करते-करते
रात से बाहर निकल आया था मैं ।
उस भुल-भुलैया से बाहर
आ खुशी हुई लेकिन देखा
कि भोर की भूल-भुलैया में
घुस गया हूँ।

(१५ फरवरी २०१४)

मन की जमीन

चुपचाप कोने में छुपा रहता हूँ
परछाइयों में मिल जाता हूँ
यही करते हो तुम
मन की खुशी चुरा लेते हो,
क्यों नहीं समझते कि
जिन्दगी पर हक हमारा है,
जिन्दगी हमारी है।
और तुम जीने का सहारा
छीन लोगे।
मन की ज़मीन पर क्यों
कब्ज़ा जमाना चाहते हो।
रौशनी का सहारा क्यों छीनते हो।
लेकिन मुझे पता है कि
एक समय तुम भी मेरी जगह थे
और तुम्हारी ज़िन्दगी की ज़मीन को,
कोई अपना हक कहना चाहता था।

(१८ अप्रैल २०१४)

ध्यान
इमरजें
के बाद
के पारं

शरतच
और च
मुजफ्फ
शरतच
मुजफ्फ
गये थे.
रूप में उनकी प्रसिद्धि नहीं
हालाँकि उन्होंने लिखना शु
था. वि...

मनोहर
से एक
बातची
सन 20
आकाश
अभिले
मैंने मनोहर श्याम जोशी जी
लंबा इंटरव्यू लिया था। उस
जीवन के...

मुंबई
की अ
जी का
मुम्बई
को ले
ब्लॉक
लिखने वाले पत्रकार से कि
एस. हुसैन जैदी की एक कि
‘मुम्बई की माफ...

TOTAL PAGEVIEWS

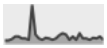

697

झरोखा

खून

लगते हैं इसे नौ महीने,
रगों में आने में।
लाल होता इसका रंग,
मुश्किल नहीं यह समझाने में।

लेकिन यह मनुष्य को कौन समझाए
बाँट दिया है इसने खून को
हिन्दू, पाकिस्तानी, मुसलमानी को,
जैसे इसका रंग लाल नहीं,
पीला, नीला या हरा है।

लड़ाई इस पर लड़ी जाती है
कि किसका खून किससे बड़ा।
मानो या न मानो, इनसानों
हम हैं भाई-भाई,
मुट्ठी कस लें तो खून के
लिए नहीं होगी लड़ाई।

इसी खून के लिए लड़ते-लड़ते
बहा देते हैं किसी जान को,
अमूल्य खून को
बहा देते हैं हम
वह नौ महीने का समय
जो वापस कभी नहीं आएगा।

[२ अक्टूबर 2013]

Like 233 people like this.

Posted by Prabhat Ranjan at 8:47 AM

+1 +5 including Prabhat

Labels: amrit ranjan

7 comments:

Rahul... June 10, 2014 at 9:08 AM

होनहार अमृत को हृदय से शुभकामनाएं ...

Reply

Kamal Choudhary June 10, 2014 at 11:57 AM

Vaah!! Apne is nanhe dost ka mureed ho gya hun... Kisee ne sach kaha hai put ke paanv paalne mein nazar aate hain! Prabhaat jee aapko dil se dhanyavaad aur Amrit ko Anant Shubhkaamnain!!
- Kamal Jeet Choudhary (J&K)

Reply

krishnababu krothapalli June 10, 2014 at 5:22 PM

बहुत गहरी सोच है

Reply

Rajesh Raman June 10, 2014 at 10:02 PM

नेतरहाट विद्यालय के संस्थापक श्रीमान् जी डॉ.रमण जी के अनुसार अनुभूति, विचार और कल्पना का संतुलित मिश्रण ही सफल काव्य रचना को जन्म देता है। चि. अमृत बढ़ते वय में इसका ख्याल रखे तो उसकी रचना में ज्यादा निखार आ सकता है। शुभकामना समेत ...राजेश रमण, नोबा-बैच १९८१-८८.

Reply

बाबुषा June 11, 2014 at 11:02 AM

इसकी बेचैनियों का सफ़र लम्बा है.

अमृत को खूब लाड़-प्यार.

Reply

धीरेन्द्र अस्थाना June 14, 2014 at 10:41 AM

बहुत खूबसूरत रचनाएँ हैं।
शुभकामनाएं अमृत को ।

Reply

Mrudul Joshi October 31, 2014 at 12:51 PM

Bal Gyaneshwar ke darshan hote hai Amrut me !

Reply

Enter your comment...

Comment as: Google Account

Publish Preview

Links to this post

Create a Link

Newer Post Home Older Post

Subscribe to: Post Comments (Atom)

google6d31c4cdb732b973.html

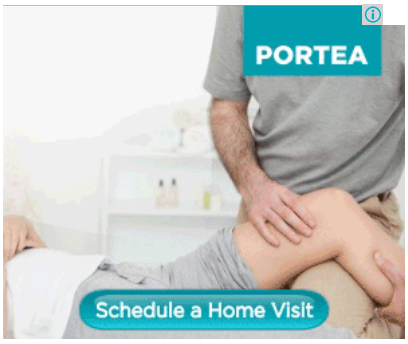

Google+ Followers

जानकी पुल

Follow

9 have us in circles

किताबें

यह वह दिशा है
जिसका रास्ता
कभी खत्म नहीं
होता।
चलते जाओ-चलते
जाओ।
पार करने का यही उपाय है,
यकीन नहीं होता?
खुद ही डुबकी लगा लो
इस दरिया में।
दलदल की तरह
यह तुम्हें अपनी तरफ
खींच लेगी।
थककर भी न रुक पाओगे तुम।
कभी इमारत से छलांग लगाओगे
कभी अपनी तलवार से
दुश्मनों का विनाश करोगे।
इस दुनिया ने तो हमें उड़ना
भी सिखा दिया।
इस दरिया के ठंडे पानी
को महसूस करो एक बार।
इसकी लहरों से सामना
क्यों करते हो?
बहा ले जाने दो
जहां यह चाहती है।
देखना इस दरिया में
नहा तुम्हें बहुत मजा आएगा।
किताबें अपनी है
अपना लो इन्हें जरा।

अमृत रंजन
डीपीएस पुणे (छठी कक्षा)

क्षा VIII, उ. प्रा. वि. गोसवा
सन्डीला, हरदोई (उ.प्र.)

- 'मम्मी क्या मैं भगवान की तरह
ता हूं?'
- 'नहीं, पर तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो
'
- 'क्योंकि मैं कहीं भी जाता हूं तो सब
कहते हैं कि हे भगवान फिर आ गया!'

'संता, मैं कल दुकान से कपड़े धोने का
लाया। कपड़े धोए तो सब सिकुड़ गए!
बच्चों को ठीक तरीके से नहीं आ रहे हैं।'
'ऐसा कर, उसी साबुन से बच्चों को
दे। सब ठीक हो जाएगा!'

www.amrutranjan.com

amrutranjan.com/

← Older posts

जी-फोर्स गेम की मस्ती

Posted on March 20, 2012 by sangamrut

मैं अपने कंप्यूटर पर एक गेम खेलता हूँ जिसका नाम है जी-फोर्स। अभी-के-अभी आपको कहानी बताता हूँ। हम एक चूहे होते हैं जिसका नाम होता है डार्विन। हमारे ही एक दोस्त स्पैकल्स ने इन्सान की बनाई गई मशीन को ज़िन्दा कर दिया होता है, इन्सानों की संख्या घटने लगती है।

please install flash

फिर स्पैकल्स को पता चलता है कि मानवजाति भी ज़रूरी है। वह मशीनों को रोकने की कोशिश करता है लेकिन कर नहीं पाता तो वह जी-फोर्स के पास आता है। अब हमारे गेम के मेन प्लेयर का काम होता है कि मानवजाति की जान बचाई जाए। हमारे सामने तरह-तरह की चीज़ें आती हैं जैसे सी-पी-यू, पंखे और बहुत कुछ। अब मैं आगे कुछ नहीं बोलूँगा दरअसल यह वीडियो बोलेगा।

Posted in Uncategorized |

सुबह हो गई मामू

Posted on January 13, 2012 by sangamrut

—अमृत रंजन

घंटी टुन-टुन ज़ोर से बजी
मैं ज़ोर से डर गया।
अलार्म बंद किया उसके बाद
मैं फिर से सो गया।
वैक्यूम क्लीनर की आवाज़ मेरे कानों में गई
उस आवाज़ से फिर मेरी नींद भी टूट गई।
लगा चिल्लाने आवाज़ बंद करो
फिर भी कोई न सुन पाया।
उठा तो मेरा पैर जाम था,
मैं थोड़ा लड़खड़ाया।
फिर बाद में मैंने अपना रौब टीवी पर जमाया।
मैंने सोचा फिल्म देख लूँ वन-टू-थ्री दबाया।
लगी आने एक फिल्म सीता को सताया।
चैनल बदला तो देखा थैंक्यू आ रही है
एक लड़की एक लड़के के लिए चीख-चिल्ला रही है।
मैंने उसका गाना सुना तो मुझे आँसू आए।
माँ ने कहा क्यों रो रहे हो गंगा-जमुना बहाए।
मैंने अपने आँसू पोंछे, माँ को पूरी कहानी बताई।
माँ ने कहा इतना तुम तब भी नहीं रोते हो
जब तुमको लगती है पिटाई।

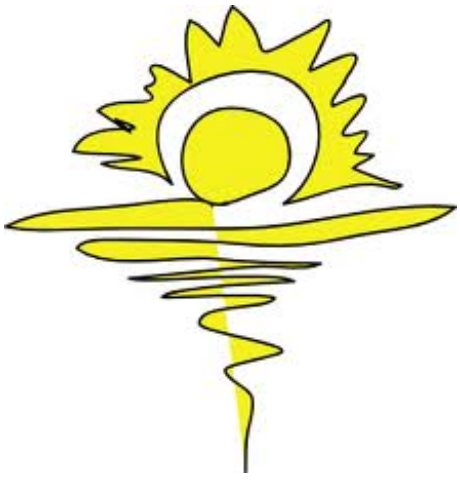

मेरी पहली कविता तिथि – १३ जनवरी

Posted in Uncategorized |

हासिल कर ली फटफटिया बंदूक

Posted on October 22, 2011 by sangamrut

आपको तो पता ही कि दिवाली की छुट्टियाँ चल रही है, सब लोग फटाके खरीद रहे हैं, तो मैंने भी सोचा क्यों ना एक फटफटिया बंदूक खरीद ली जाए। मैं मेरे पापा को रोज़ आकर कहता था कि, “पापा, पापा मुझे एक रिवॉल्वर वाली फटफटिया बंदूक चाहिए।” पापा ने कहा,”ठीक है आज, कल या परसों लेंगे। तो फिर मैंने सोचा,” आज खरीद लेंगे।”लेकिन पापा ने कहा, “आज नहीं बेटा एक बहुत ज़रूरी काम आ गया है।”तो फिर मैंने सोचा, “कोई बात नहीं, कल खरीद लेंगे।” कल,मैने पापा से पूछा,”हम मेरी बंदूक कब खरीदने चल रहे हैं?” पापा ने कहा, “कल।” मैंने पूछा,”क्यों।” पापा ने कहा क्योंकि”मम्मा की तबीयत कुछ ठीक नहीं है।” मैं चिड़चिड़ाने लगा। मैं चिड़चिड़ करता हूँ तो पापा थोड़ा गुस्सा करते हैं। परसों के दिन जब हम बाहर गए, तब मैंने ज़िद करके मेरी फटफटिया बंदूक ले ली।

Posted in Uncategorized |

मिशन इम्पॉसिबल ऑपरेशन सूरमा

Posted on October 2, 2011 by sangamrut

मैं अपने प्लेस्टेशन पर मिशन इम्पॉसिबल ऑपरेशन सूरमा खेलता हूँ। मैं अभी मिशन पाँच पर हूँ। इस खेल में हम ईथन का रोल करते हैं। हमारा साथ लूथर, जैसमिन, स्पैलविन और सोफिया देते हैं। हमें चीफ रिसर्च साइनटिस्ट आलगो को मारना होता है। शुरू-शुरू में हम मारकु की तलाश में होते हैं। क्योंकि उसके पास एक मिनी डिस्क होती है, जिसमें आलगो की सारी जानकारी होती है। हम जब हवा से कूदते हैं तब हमें पोज़िशन पर आना होता है फिर जेटपैक ऑन करना होता है।

please install flash

हमें एक गार्ड और एक डॉक्टर की फोटो भी लेनी होती है ताकि हम एक मास्क बना पाएँ। अब मेरे औज़ार भी तो जान लीजिए। सबसे पहला जो मुझे पसंद है फरार ४७, आईपी ४५, टरंटुलेज़र, माईकौड, बाइनाकुलर्स और सोनिक इमेजर्स। मैं कुछ विडियोस भी लगा रहा हूँ। आप आनंद लीजिए। और हो सके तो खेलिए भी।

Posted in Uncategorized |

देश के सिपाही

Posted on August 7, 2011 by sangamrut

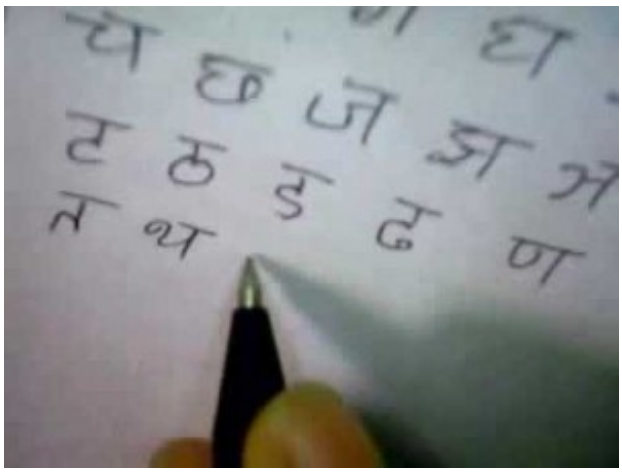

पंद्रह अगस्त आने वाला है। हमारी आज़ादी का दिन। हमारे देश के सिपाहियों ने जान गंवा दी थी हमारे इस देश के लिए। मेरे स्कूल की एक दोस्त है – सिद्धि। वह एक दिन पूरे क्लास को बतायी कि उनके दादा के पापाजी की मौत अंग्रेजों से लड़ने में हो गई थी। मेरे दादा के पापाजी भी स्वतंत्रता सेनानी थे, वह बाद में गाँव के मुखिया बने थे। इतने दिन हो गए हैं पर आज भी कितने लोग मुश्किल में रहते हैं।

एक दिन मुझे एक बात पर विश्वास नहीं हुआ कि कोई पचास साल का आदमी भी नहीं पढ़ सकता है। मेरे दादाजी प्रिंसिपल थे, कॉलेज के। वह बिहार के मधेपुरा में मोटरसाइकिल पर घूम-घूम कर लोगों को पढ़ाते थे। ऐसे लोगों को जो काफी बड़े हो गए हैं लेकिन पढ़ नहीं पाए। एक दिन मेरे पापा भी उनके साथ घूमने गए थे। एक पचास साल का आदमी दोड़कर आया और रोने लगा। वह बोला, मालिक हम पढै लए सीख गेलिए। वह उस वक़्त बीमार भी था। मुझे अजीब लगा। मेरा स्कूल भी बहुत अच्छा है। यहाँ भी गरीब बच्चों को पढ़ाया जाता है। मुझे लगता है कि जो आज ऐसे लोगों को पढ़ाते हैं वह भी एक सिपाही हैं जो बिना तीर और तलवार के लड़ाई लड़ते हैं। मैं भी ऐसा सिपाही बनूँगा।

Posted in Uncategorized |

क्लब पेंग्विन

Posted on May 29, 2011 by sangamrut

मैं क्लब पेंग्विन इंटरनेट पर खेलता हूँ। वहाँ अब मैं मेंबर हूँ और जो मेंबर नहीं होते हैं वह कुछ नहीं खरीद सकते। और मैंने चार दिनों पहले ही मैंने मेंबरशिप ज्वाइन की और मेरे पापा को तीन सौ रुपए देने पड़े और तब मैं इतना खुश था कि आप पूछिए मत। इतने सालों के बाद मुझे मेंबरशिप मिली। मेरे पापा कहते हैं जो काम तुम्हारा पेंग्विन करता है वह काम तुम मुझे करके दिखाओ, तो मैं चिढ़ जाता हूँ। और तो और मैंने अपने इग्लू को भी सजाया है। यह क्लब पेंग्विन की बात मैंने अपने दोस्तों से जानी है। क्लब पेंग्विन में हमको जहाँ भी जाना हो क्लिक करना होता है अगर वह जगह बहुत दूर है तो आपके दाहिने हाथ में मैप होता है उसमें क्लिक कीजिए। उसमें आपको जहाँ जाना है किलक कीजिए। अगर हम मेंबर हैं और हमें हमारा शरीर एकदम खाली नज़र आता है और तो जो मेंबर हैं वो कपड़े-वपड़े खरीद सकते हैं। अगर हमारा किसी से मिलने का मन करे तो पहले उसे फोन करके बताना पड़ेगा कि कहाँ पर आना है और कब आना है।

Posted in Uncategorized |

सब्र का फल आम होता है

Posted on May 8, 2011 by sangamrut

आम मुझे बहुत पसंद है क्योंकि वह बहुत मीठे होते हैं। और यहाँ पुणे में मैं हापुस आम खाता हूँ। इसी को अलफांसो बोला जाता है। और आम हमारा राष्ट्रीय फल भी है और मेरा नाम आम से बहुत मिलता-जुलता है, इसलिए मैंने अपने बलॉग का नाम आम का पेड़ रख दिया। जब मैं नर्सरी में था तब मेरी टीचर शालिनी मैडम थीं। वह मुझे मैंगो रंजन बुलाती थीं क्योंकि मैं टिफिन में रोज आम ले जाता था। मुझे मन करता है कि कोई भी आम ना खाए सिवाय मेरे। मुझे एक सौ पच्छतर आम मिले तो भी मैं उन्हें एक ही दिन में खा जाऊँगा। और आज भी मैंने मेरी मम्मा से कहा, मम्मा-मम्मा, मुझे आम काट के दो ना, तो मम्मा ने कहा-बेटा यह बात तुम अपने पापा से कहो, मैं कच्चे आम का अचार बना रही हूँ। तो मैंने अपने पापा से भी वही बात कही तो उन्होंने मुझे आम काटकर दिया। जब उन्होंने आखिरी आम काटा तो एक टुकड़ा खा लिया। मुझे फिर बहुत गुस्सा आया कि पापा ने क्यों खाया। फिर मैंने सारा आम एक ही मिनट में खा लिया। और गुठली देर तक चूसता रहा…।

Posted in Uncategorized |

मज़ा आया ज़ोकोमोन

Posted on April 24, 2011 by sangamrut

मैं इस शुक्रवार को ज़ोकोमोन देखने के लिये गया था। उसमें बहुत मज़ा आया। मैं यह फिल्म बौलीवुड ई-स्क्वेयर में देखने के लिये गया था, आपने नाम तो सुना ही होगा। तभी मैं अपने पापा और मम्मा से पूछ रहा था कि हम कहाँ जा रहे है -फिल्म देखने। पर पापा या मम्मा किसी ने जवाब नहीं दिया। फिर कुछ देर बाद पापा ने कहा की हम बौलीवुड ई-स्क्वेयर में जा रहे हैं जहां हमने प्रीडेटर्स देखा था। तो कुछ देर बाद हम उधर अंदर पहुँच गए तो मैंने देखा तो मैं चौंक उठा कि उधर तो कोई नहीं था मैं बहुत उछल-कूद कर रहा था, पर मेरी मम्मा ने मुझे डाँटा और कहा की चुप-चाप बैठो। और दो-तीन मिनट के बाद और कुछ लोग आए। फिर फिल्म शुरू हो गई।

उस फिल्म में एक बच्चे का नाम था कुणाल जिसके मम्मी या पापा नहीं होते हैं। वह मर गए है। बस उसके चाचा और चाची होते हैं

और वह भी बहुत लालची और बदमाश। एक बार चाचा उसे मेले में ले गए और उसे वहाँ पर ही छोड़ दिया। फिर उसे किट्टू दीदी और बाद में मैजिक अंकल मिले। साइंटिस्ट मैजिक अंकल ने ही उसे बनाया ज़ोकोमोन। ज़ोकोमोन इसी मैजिक अंकल के साथ मिलकर चाचा की धुलाई करता है। मैं तो इसे चार स्टार दूँगा। जंगल-जंगल और पर्वत-पर्वत वाला गाना मुझे काफी पसंद आया। आप भी देखिएगा ज़ोकोमोन।

Posted in Uncategorized |

सत्र का पहला दिन

Posted on April 9, 2011 by sangamrut

चार अप्रैल को मेरे सत्र के पहले दिन मुझे बहुत मज़ा आया। हमारी क्लास टीचर आभा जोशी मैडम हैं। वह पहले मेरे बस में हुआ करती थीं। मेरे बस का नंबर था पी-सिक्सटी नाइन। वह वक्त था जब मेरा दोस्त पार्थ मेरी बस में था और तब मैं सेकेंड स्टैंडर्ड में था। और वह दूसरा साल था जब मैं और अक्षज एक साथ एक ही क्लास में थे। और पहले दिन मैं कुछ अच्छा करने की सोच रहा था पर कुछ करने ही नहीं मिला, फिर भी मुझे बहुत मज़ा आया क्योंकि मुझे एक घड़ी भी मिली थी। पर मेरा बैग बहुत भारी था। और हमारी मैडम का सबजेक्ट हिन्दी है जो मेरी मदर टंग है। फिर मैं वापस घर पहुँच गया। मेरा पहला दिन बहुत अच्छा बीता।

Posted in Uncategorized |

भगवान भी खूनी हैं

Posted on March 14, 2011 by sangamrut

आप लोगों ने तो सुना ही होगा की जापान में भूकंप आया था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि कितनी तबाही मची होगी। और आप को पता है कि सुनामी की लहरों से कितने लोग घायल हुए होंगे। ज़ी न्यूज़ की बड़ी ख़बर मेरे पापा का एक मनपसंद प्रोग्राम है। प्रोग्राम में देखा कि एक बम भी फूटा है, उस बम से सारी दुनिया परेशान है। इस तरह से तो भगवान भी खूनी हो गए जिसे कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता। मैं तो बहुत छोटा हूँ...मुझे बहुत डर लगने लगता है।

Posted in Uncategorized |

← Older posts